12 OCT 12 2026.qxd 11-10-2026 22:22 Page 1

मां दुर्गा के नौ स्वरूप और आध्यात्मिक यात्रा

नवरात्र हिंदू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है। इन नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। भक्त व्रत रखते हैं, मंदिरों में दर्शन करते हैं और मां से सुख, शांति तथा समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि नवरात्रि नौ दिनों तक ही क्यों मनाई जाती है? इसके पीछे केवल धार्मिक मान्यता ही नहीं, बल्कि पौराणिक कथाएं, अंक ज्योतिष और आध्यात्मिक विचार भी हैं। चलिए इसके बारे में विस?तार से जानते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, महिषासुर नाम का एक शक्तिशाली असुर था। उसके अत्याचारों से देवता और मनुष्य परेशान थे। उसे वरदान प्राप्त था, जिसके कारण देवताओं के लिए उसे हराना कठिन हो गया था। तब सभी देवताओं की शक्तियों से मां दुर्गा प्रकट हुईं। कुछ धार्मिक कथाओं में देवी और महिषासुर के बीच भयंकर युद्ध का वर्णन मिलता है। मान्यता है कि यह युद्ध नौ दिनों तक चला। मां दुर्गा ने अपने अलग-अलग रूपों और शक्तियों से असुर की सेना का सामना किया। अंत में दसवें दिन महिषासुर का वध हुआ और बुराई पर अच्छाई की जीत हुई। इसी विजय की याद में नौ दिनों तक नवरात्र और दसवें दिन विजयादशमी मनाई जाती है। न्यूमेरोलॉजी में अंक 9 को विशेष महत्व दिया जाता है। अंक ज्योतिष में इसे पूर्णता, ऊर्जा और परिवर्तन का प्रतीक माना जाता है। गणित में भी नौ की एक दिलचस्प विशेषता है। किसी संख्या को नौ से गुणा करने पर प्राप्त उत्तर के अंकों का योग कई बार नौ ही पाया जाता है। उदाहरण के लिए, 9 को 2 से गुणा करने पर 18 मिलता है। अब 1 और 8 को जोड़ें, तो उत्तर 9 आता है। इसी तरह 9 को 5 से गुणा करने पर 45 मिलता है और 4 तथा 5 का योग भी 9 होता है। इसलिए अंक ज्योतिष में इस अंक को पूर्णता और निरंतरता से जोड़कर देखा जाता है। धार्मिक ग्रंथों में मानव शरीर को नौ द्वारों वाला नगर भी कहा गया है। सामान्य रूप से इन नौ द्वारों में दो आंखें, दो कान, दो नथुने, मुंह, जननेंद्रिय और गुदा शामिल हैं। इस विचार का उल्लेख भगवद्गीता में भी मिलता है, जहां शरीर को नौ द्वारों वाले नगर के रूप में समझाया गया है। सामान्य रूप से इन नौ द्वारों में दो आंखें, दो कान, दो नथुने, मुंह, जननेंद्रिय और गुदा शामिल हैं। इस विचार का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी इंद्रियों के माध्यम से बाहरी दुनिया से जुड़ता है। नवरात्र के नौ दिनों को आत्मचिंतन, इंद्रियों पर नियंत्रण और मन को शुद्ध करने के अवसर के रूप में देखा जाता है। यह भी एक कारण हो सकता है कि नवरात्र को नौ दिनों तक मनाया जाता है। नवरात्र के प्रत्येक दिन मां दुर्गा के एक स्वरूप की पूजा की जाती है। इन नौ स्वरूपों को नवदुर्गा कहा जाता है। इनमें मां शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री शामिल हैं। इन सभी स्वरूपों के अपने अलग-अलग धार्मिक और आध्यात्मिक अर्थ हैं। इसलिए भी नवरात्रा को नौ दिन तक मनाया जाता है।



मां दुर्गा ने अपने अलग-अलग रूपों और शक्तियों से असुर की सेना का सामना किया। अंत में दसवें दिन महिषासुर का वध हुआ और बुराई पर अच्छाई की जीत हुई। इसी विजय की याद में नौ दिनों तक नवरात्र और दसवें दिन विजयदशमी मनायी जाती है।

धार्मिक ग्रंथों में मानव शरीर को नौ द्वारों वाला नगर भी कहा गया है। सामान्य रूप से इन नौ द्वारों में दो आंखें, दो कान, दो नथुने, मुंह, जननेंद्रिय और गुदा शामिल हैं। इस विचार का उल्लेख भगवद्गीता में भी मिलता है, जहां शरीर को नौ द्वारों वाले नगर के रूप में समझाया गया है। सामान्य रूप से इन नौ द्वारों में दो आंखें, दो कान, दो नथुने, मुंह, जननेंद्रिय और गुदा शामिल हैं। इस विचार का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी इंद्रियों के माध्यम से बाहरी दुनिया से जुड़ता है। नवरात्र के नौ दिनों को आत्मचिंतन, इंद्रियों पर नियंत्रण और मन को शुद्ध करने के अवसर के रूप में देखा जाता है। यह भी एक कारण हो सकता है कि नवरात्र को नौ दिनों तक मनाया जाता है।





गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

हमारी चेतना स्वयं को 6 प्रकारों या 6 रूपों में अभिव्यक्त करती है। प्रथम है – इच्छा शक्ति, अर्थात इच्छा। इच्छा, चेतना का एक रूप है। मन में अनेक प्रकार की इच्छाएँ उठती रहती हैं। एक इच्छा पूरी होती है, तो दूसरी इच्छा सामने आ जाती है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि वे इच्छाएँ छोटी हैं या बड़ी। इस प्रकार इच्छाओं का सिलसिला चलता ही रहता है और हम उसी चक्र में उलझ जाते हैं। द्वितीय है – ज्ञान शक्ति, अर्थात जानने की शक्ति। आप कुछ जानना चाहते हैं, ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं, जिसके लिए आप विश्वविद्यालयों व सभाओं में जाते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं और यात्राएँ करते हैं। यही जानने की शक्ति है, जिसके कारण कोई गलती हो जाने पर उसके परिणाम का बोध और पश्चाताप होता है। कर्म और उसके परिणाम के मध्य संबंध का ज्ञान, ज्ञान शक्ति से ही होता है। तृतीय है – क्रिया शक्ति, अर्थात कर्म या गतिविधि की शक्ति। जीवन निरंतर गतिविधियों से भरा हुआ है। हर समय कुछ-न-कुछ होता रहता है। आप लगातार किसी न किसी कार्य में लगे रहते हैं। चतुर्थ है – शान्तता, अर्थात स्थिर और शांत हो जाने की क्षमता। यह क्षमता हर व्यक्ति में होती है; आवश्यकता केवल इसे विकसित करने की है। पाँचवाँ है – विमर्श, अर्थात विवेकपूर्ण विश्लेषण और निर्णय। आपके भीतर जो परखने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता है, वही विमर्श है। हम प्राय: सही-गलत, अच्छे-बुरे का मूल्यांकन करते हैं और तदुपरांत निर्णय लेते हैं – यह हमारी विमर्श क्षमता का ही परिणाम है। अंतिम है – प्रकाश, अर्थात उपस्थिति या दिव्य अनुभूति। यह ऐसी अनुभूति है, जिसे आप सोचकर या शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। यह आपकी तर्कशक्ति और बौद्धिक समझ से परे है। प्रकाश केवल उपस्थिति का अनुभव है, और इस विषय में संसार में बहुत कम ज्ञान और जागरूकता है। यज्ञों में ये सभी छह शक्तियाँ अपनी पूर्णता को प्राप्त करती हैं। कई बार यज्ञ में उपस्थित व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि कौन-से मंत्रों का उच्चारण हो रहा है, कौन-सी विधियाँ चल रही हैं या कौन-से अनुष्ठान हो रहे हैं। फिर भी वहाँ एक अद्भुत और दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है। आप उस ऊर्जा को महसूस करते हैं – अपने विचारों और निर्णयों से परे जाकर, मात्र एक प्रकाश और उपस्थिति के रूप में।

प्रकाश केवल उपस्थिति का अनुभव है, और इस विषय में संसार में बहुत कम ज्ञान और जागरूकता है। यज्ञों में ये सभी छह शक्तियाँ अपनी पूर्णता को प्राप्त करती हैं। कई बार यज्ञ में उपस्थित व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि कौन-से मंत्रों का उच्चारण हो रहा है, कौन-सी विधियाँ चल रही हैं या कौन-से अनुष्ठान हो रहे हैं। फिर भी वहाँ एक अद्भुत और दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है। आप उस ऊर्जा को महसूस करते हैं - अपने विचारों और निर्णयों से परे जाकर, मात्र एक प्रकाश और उपस्थिति के रूप में।

मैहर का पौराणिक महत्व

नवरात्र का उत्सव मां दुर्गा की कृपा प्राप्त करने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, शारदीय नवरात्र के दौरान मां दुर्गा की पूजा-अर्चना और व्रत करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और जीवन में आने वाले संकट दूर हो जाते हैं। शारदीय नवरात्र के दौरान हर तरफ मां दुर्गा के भजन सुनने को मिलते हैं। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के विंध्य क्षेत्र में



पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, मैहर का अर्थ है माई का हार। जब भगवान शिव माता सती के पार्थिव शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब इसी स्थान पर सती का हार गिरा था, जिसकी वजह से यह अत्यंत पवित्र शक्तिपीठ माना जाता है।

स्थित त्रिकूट पर्वत पर विराजमान मां शारदा के दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में भक्त पहुंचते हैं। यह मंदिर भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां शारदीय नवरात्र में कई सुंदर भजन सुनने को मिलते हैं, जिनमें अंगना पधारो मोरी शारदा भवानी... भी प्रमुख रूप से शामिल है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, मैहर का अर्थ है माई का हार। जब भगवान शिव माता सती के पार्थिव शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब इसी स्थान पर सती का हार गिरा था, जिसकी वजह से यह अत्यंत पवित्र शक्तिपीठ माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि यहां मां भवानी बुद्धि और शक्ति की देवी शारदा के रूप में भक्तों का कल्याण करती हैं। यह भजन मां शारदा को समर्पित एक बेहद लोकप्रिय और भावपूर्ण गीत है। इसके बोलों में एक भक्त की गहरी आस्था, प्रेम और माता के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना देखने को मिलती है। इस पंक्ति का सीधा अर्थ है कि हे मेरी मां शारदा भवानी! आप मेरे आंगन पधारिए। यहां आंगन का अर्थ भक्त का मन और हृदय है। इस भजन के द्वारा भक्त मां से विनती कर रहा है कि वे त्रिकूट पर्वत से उतरकर उसके जीवन और हृदय में निवास करें। वैसे तो सालभर यहां देवी के दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में भक्त आते हैं, लेकिन चैत्र और शारदीय नवरात्र के दौरान मैहर की छटा देखने लायक होती है। इस दौरान लाखों की संख्या में भक्त मां भवानी का आशीर्वाद लेने त्रिकूट पर्वत पहुंचते हैं।

नवरात्र का आध्यात्मिक अर्थ और महत्व

नवरात्रि का अर्थ है नौ रातें। नव का अर्थ है नौ और रात्रि का अर्थ है रात। रात्रि आराम और ताजगी प्रदान करती है। रात के दौरान,आप नींद के माध्यम से अंदर की ओर मुड़ते हैं और सुबह आप तरोताजा और आराम महसूस करते हुए उठते हैं। उसी तरह, नवरात्रि या नौ रातें साल का वह समय होता है जब आपको गहन विश्राम का अनुभव करने का मौका मिलता है। यह गहन विश्राम सभी प्रकार की परेशानियों से मुक्ति और रचनात्मकता लाता है।



नवरात्रे यानि माता के 9 दिन। हर साल 2 बार नवरात्रि आती हैं। एक चैत्र नवरात्रि दूसरी शारदीय। दोनों ही नवरात्रियों का खास महत्व होता है। सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक तौर पर भी व्यक्ति इसका फायदा उठा सकता है। इन दिनों में साधना करने से व्यक्ति अपनी चेतना के स्तर को और बढ़ा सकता है। ये दिन आत्मसाक्षात्कार में भी फायदेमंद होते हैं। नवरात्रि का अर्थ है नौ रातें। नव का अर्थ है नौ और रात्रि का अर्थ है रात। रात्रि आराम और ताजगी प्रदान करती है। रात के दौरान, आप नींद के माध्यम से अंदर की ओर मुड़ते हैं, और सुबह आप तरोताजा और आराम महसूस करते हुए उठते हैं। उसी तरह, नवरात्रि या नौ रातें साल का वह समय होता है जब आपको गहन विश्राम का अनुभव करने का मौका मिलता है। यह गहन विश्राम सभी प्रकार की परेशानियों से मुक्ति और रचनात्मकता लाता है। इस अवधि के दौरान किए गए उपवास, ध्यान, प्रार्थना और अन्य आध्यात्मिक अभ्यास इस गहरे आराम को लाने में मदद करते हैं। यहां तक कि इस समय के दौरान इंद्रियों पर कंट्रोल करने से भी हम विश्राम की अवस्था पा सकते हैं। यही कारण है कि धार्मिक तौर पर इस समय खान-पान और लाइफस्टाइल से जुड़े नियम बताए गए हैं। हमारी आत्मा अजर है अमर है और इस ब्रह्मांड में अनादिकाल से है। हमारी आत्मा ही है जो इस ब्रह्मांड की ऊर्जा का स्रोत बनकर उससे कनेक्ट कर सकती है। नवरात्रि के 9 दिनों में इन्हीं ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं तक पहुंचा जा सकता है क्योंकि कुछ सूक्ष्म ऊर्जाएं इन दिनों हमारे साथ खुद कनेक्ट करने की कोशिश करती हैं। ये हमें आत्मा की खोज के लिए प्रेरित करती हैं। नवरात्रि के समय किया गया ध्यान, मंत्रजाप और प्रार्थना ना सिर्फ मन की शांति का कारण बनते हैं बल्कि यह हमें हमारी आत्मा से जोड़ते हैं। जब भी हम अपनी आत्मा के साथ कनेक्शन बनाते हैं तब हम सकारात्मक ऊर्जा से ओत प्रोत हो जाते हैं।

नवरात्र में रंगों का महत्व

पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा की जाएगी। इस दिन नारंगी रंग के वस्त्र धारण करना शुभ माना जाता है। दूसरे दिन सफेद रंग मां ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाएगी। इस दिन सफेद रंग के वस्त्र धारण करने की परंपरा है। तीसरे दिन लाल रंग मां चंद्रघंटा की आराधना की जाएगी। इस दिन लाल रंग के कपड़े पहनना शुभ माना जाता है। चौथे दिन रॉयल ब्लू मां कूष्मांडा की पूजा होगी. इस दिन रॉयल ब्लू यानी गहरे नीले रंग के वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। पांचवें दिन पीला रंग मां स्कंदमाता की पूजा की जाएगी। इस दिन पीले रंग के वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है। छठे दिन हरा रंग मां कात्यायनी की पूजा होगी। इस दिन हरे रंग के वस्त्र धारण करना शुभ माना जाता है। हरा रंग प्रकृति, विकास और नई ऊर्जा का प्रतीक है। सातवें दिन स्लेटी रंग मां कालरात्रि की पूजा की जाएगी। इस दिन स्लेटी यानी ग्रे रंग के कपड़े पहनने की परंपरा बताई जाती है। आठवें दिन गुलाबी रंग अष्टमी तिथि पर मां महागौरी की पूजा की जाती है। इस दिन गुलाबी रंग के वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। नौवें दिन बैगनी रंग नवमी तिथि पर मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। इस दिन बैंगनी रंग के वस्त्र धारण करना शुभ माना जाता है।

श्री ग्रहयंत्रेश्वर 'नवग्रहेश्वर' माहात्म्यम् ...(काल चक्र)

महादेव उवाच-पूर्वभागे तु भैरवरस्य स्थापितं ग्रहयंत्रकम्। यत्र साक्षाद्ग्रहा:सर्वे स्तुवन्ति भैरवं विभुम् ॥ 1 ॥ भैरवस्याज्ञया ते वै फलं यच्छन्ति कर्मणाम्। तत्रैव कालकूपोऽस्ति यत्र काल:स्वयं स्थित: ॥ 2 ॥ तत्रैव सन्निधौ वत्स! घृष्णेशो ज्योतिरव्ययम्। सूक्ष्मरूपेण वसति काशीवासिहितेरत: ॥ 3 ॥ मदाज्ञया यदा जातो भैरव: काशिकापुरे। न देवा:आगतास्तत्र ग्रहा मायाविमोहिता: ॥ 4 ॥ ततो देवेन्द्रवाक्येन भीतास्ते शरणं ययु:। चक्रुस्तत्र महायंत्रं शिवलिङ्गं च पावनम् ॥ 5 ॥ आगमोक्तविधानेन मम पूजां प्रचक्रिरे। भैरवस्य प्रसादेन निर्भयास्ते तदाऽभवन् ॥ 6 ।। महादेव बोले-हे नारद! भगवान कालभैरव के सम्मुख पूर्व दिशा में एक नवग्रह यंत्र स्थापित है, जहाँ साक्षात् नौ ग्रह एकत्र होकर नित्य उनकी स्तुति और आराधना करते हैं। कालभैरव के निर्देशानुसार ही ये ग्रह काशीवासियों को उनके प्रारब्ध और कर्मों के अनुरूप फल प्रदान करते हैं। इसी स्थान के समीप नवग्रहेश्वर लिंग प्रतिष्ठित है और हे पुत्र! यहीं वह सुप्रसिद्ध काल-कूप भी स्थित है, जिसमें स्वयं काल पुरुष विराजमान हैं। इसी कूप के सान्निध्य में भगवान घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग अपने मूल स्थान से आकर सूक्ष्म रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। पूर्व काल में, जब मेरे आदेश से कालभैरव यहाँ स्थापित हुए, तब कुछ समय काल पश्चात समस्त देवी-देवताओं ने यहाँ उपस्थित होकर उनकी वन्दना की, किंतु मायावश ग्रहों के अधिपति नहीं आए। तत्पश्चात, जब इंद्र ने उन्हें कालभैरव की महिमा और रहस्य से अवगत कराया, तब वे भयभीत होकर एक साथ यहाँ पधारे। उन सभी ने भैरव के सम्मुख एक नवग्रह यंत्र निर्मित किया और उसके ऊपर शिवलिंग की स्थापना कर आगम मंत्रों द्वारा मेरा पूजन एवं स्तवन किया। नारद उवाच- नमस्ते देवदेवेश शिवनारायणाव्यय। यंत्रं तदागमं विधिं पूजाया वद मे प्रभो ॥ 7 ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन तन्मे कथय सुव्रत। भक्तोऽस्मि तव दासश्च त्वत्प्रसादाभिकाङ्क्षी वै ॥ 8 ॥ नारद जी बोले-



हे नाथ! हे शिव-नारायण! यदि आप मुझे अपना अनन्य सेवक स्वीकार करते हैं, तो कृपा कर मुझे उस नवग्रह यंत्र, विशिष्ट आगम मंत्रों और ग्रहों द्वारा संपन्न की गई उस पूजा विधि का विस्तारपूर्वक बोध कराएं। हे महादेव! यह विषय अत्यंत गोपनीय होने पर भी मुझ पर कृपा कर इसे प्रकट करें। महादेव उवाच- नारद! त्वं स्वभावज्ञश्चञ्चलोऽपि हरिप्रिय:। अतस्तुभ्यं प्रवक्ष्यामि विधिमेतदनुत्तमम् ॥ 67॥ गोपनीयं सदा ह्येतद्यथा नारी निजं धनम्। मदीयं पञ्चायतन-भक्तानामेव चाधिकार: ॥ 68 ॥ ग्रहा! श्रृणुत मद्वच: भैरवो मम विग्रह:। अस्यैवाज्ञा मदाज्ञा हि पालनीया प्रयत्नत: ॥ 69 ॥ इदं च स्थापितं लिङ्गं ग्रहयंत्रेश्वरं स्मृतम्। अस्य दर्शनमात्रेण ग्रहपीडा विनश्यति ॥ 70 ॥ कलौ तु मन्दबुद्धीनां मनुजानां हितैषिणा। प्रतिपन्नवर्मी यावत् शुक्लपक्षे च भक्तित: ॥ 71 ॥ य: पठेत्विधिमेतं वै पश्येल्लिङ्गं च पावनम्। ग्रहदोषविनिर्मुक्त: सालोक्यं मोक्षमाप्नुयात् ॥ 72 ॥ किमन्यत् श्रोतुमिच्छास्ति तव देवर्षिसत्तम? ॥ 73॥ महादेव बोले- हे नारद! यद्यपि आपका स्वभाव चंचल है, किंतु आपकी अनन्य नारायण-भक्ति को देखते हुए मैंने यह विधि आपको बताई है, परंतु इसे सदैव गुप्त रखना। जिस प्रकार एक कुलवधू की मर्यादा का अधिकार उसके आत्मीय जनों तक सीमित रहता है, उसी प्रकार इस गुप्त विधि पर अधिकार केवल मेरे पंचायतन स्वरूप के अनन्य भक्तों का ही होगा। अत: हे नारद! इसे अपनी नारायण-भक्ति के समान ही सुरक्षित रखना। मेरे प्रकट होते ही नवग्रहों को अभय प्राप्त हुआ और मेरी प्रसन्नता देखकर कालभैरव भी शांत हुए। मैंने ग्रहों से कहा-हे ग्रहपतियों! ये प्रभु कालभैरव मेरी ही शक्ति हैं, आप सभी नित्य इनका अनुसरण करें और इनकी आज्ञा को मेरी ही आज्ञा मानें। तुम्हारे द्वारा स्थापित यह शिवलिंग संसार में ग्रहयंत्रेश्वर के नाम से विख्यात होगा। जो कोई भी सात्विक आगम पद्धति से यहाँ पूजन करेगा, उसके पूर्वजन्मों से लेकर वर्तमान तक के समस्त ग्रह-जनित दोष पूर्णत: समाप्त हो जाएंगे। हे ग्रहों! तुम सभी नित्य प्रात:काल यहाँ उपस्थित होकर कालभैरव की आराधना करो, इससे तुम्हारे ऐश्वर्य में वृद्धि होगी और तुम्हें मेरी भक्ति प्राप्त होगी। हे नारद! कलिकाल (कलयुग) में मानव अल्प-बुद्धि और व्यर्थ के तर्क-वितर्क से ग्रस्त होगा। उस समय मेरे द्वारा बताई गई सात्विक विधि से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक केवल इस पद्धति का पाठ और शिवलिंग के दर्शन मात्र से मनुष्य भीषण कष्टों से मुक्त हो जाएगा और अंतत: आवागमन के चक्र से छूटकर सालोक्य मोक्ष को प्राप्त करेगा। हे नारद! अब आप और क्या सुनना चाहते हैं?